

**मुगल काल में सुलेख का विकास तथा भारतीय समाज पर इसका प्रभाव**Raj NandiniVerma<sup>1\*</sup>, DrArvind Kumar Verma<sup>2\*\*</sup>,

1. Research Scholar,

2. Associate Professor

\* Faculty of Social Science (Department of History), Purnea University, Purnia, Bihar, India

\*\*Professor and H.O.D, Faculty of Social Science (Department of History), Purnea University, Purnea, Bihar, India

Corresponding Author: Raj NandiniVerma

Email address:-rn423532@gmail.com

**सार:** सुलेख की कला में सटीक अक्षर अनुपात के साथ सुंदर लिखावट बनाना शामिल है। यह दुनिया भर में व्यावहारिक रूप से हर जगह तेजी से लोकप्रिय हो गया है और अविश्वसनीय रूप से और व्यापक रूप से उपयोग किया गया है। सुलेख कला की उत्पत्ति मुख्य रूप से पूर्वी एशिया, यूरोप, भारतीय और इस्लामी देशों आदि से हुई। यदि हम पश्चिमी, भारतीय और पूर्वी एशियाई सुलेख की जांच करते हैं, तो हम ऐतिहासिक प्रभाव का एक छोटा सा बिंदु खोजें जो उनकी विविधता को एकजुट करता है। हमारा लक्ष्य इसकी उत्पत्ति, विभिन्न यूरोपीय और भारतीय शैलियों और इस्लामी लिपियों पर शोध के व्यापक दृष्टिकोण का उपयोग करके सुलेख को उजागर करना है; भारत में रचनात्मक सुलेख का ऐतिहासिक महत्व। मुगल काल के दौरान, प्रकृति के सार, आध्यात्मिकता, रचनात्मकता, अरबी और ज़ूमोर्फिज़्म जैसे कई रूपों में रचनात्मक सुलेख के शांत पहलू।

[Verma, R.N. and Verma, A.K. **मुगल काल में सुलेख का विकास तथा भारतीय समाज पर इसका प्रभाव**. *The International Journal of Interpretation, Observation and Analysis*, 2025; Volume 2, Issue 1:42-45 (April-June). ISSN 2349-0713, Peer-reviewed (online/offline), Refereed, Indexed and International Journal (Since 2013), Global Impact Factor: 5.776

**Keywords:** सुलेख का विकास, 'मुगल काल' भारतीय समाज, प्रभाव

**परिचय:-**

सुलेख की कला में सटीक अक्षर अनुपात के साथ सुंदर और आकर्षक लिखावट का निर्माण किया जाता है। यह कला आज विश्व भर में अत्यंत लोकप्रिय और व्यापक रूप से उपयोग की जाने लगी है। सुलेख की उत्पत्ति मुख्यतः पूर्वी एशिया, यूरोप, भारत और इस्लामी देशों में हुई थी।

यदि हम पश्चिमी, भारतीय और पूर्वी एशियाई सुलेख पर दृष्टि डालें, तो हम यह पाते हैं कि विभिन्न शैलियों की विविधता के बावजूद एक साझा ऐतिहासिक प्रभाव उनकी एकता का कारण बनता है। हमारा उद्देश्य इस कला की उत्पत्ति, विभिन्न यूरोपीय और भारतीय शैलियों तथा इस्लामी लिपियों पर शोध के व्यापक दृष्टिकोण से सुलेख के विकास को उजागर करना है, साथ ही भारत में रचनात्मक सुलेख के ऐतिहासिक महत्व को भी सामने लाना है।

मुगल काल में रचनात्मक सुलेख ने प्रकृति के सार, आध्यात्मिकता, रचनात्मकता, अरबी प्रभाव और ज़ूमोर्फिज़्म (पशु आकृतियों में अक्षरों का उपयोग) के शांतिपूर्ण पहलुओं को अपनाया।

**कैलिग्राफ**

ऐतिहासिक प्रभावों, सामाजिक-आर्थिक पक्षों और सांस्कृतिक

आयामों को समझने के लिए 'कैलिग्राफ' को प्राथमिक रूपरेखा के रूप में अपनाया गया है।

**आधुनिक युग में सुलेख का महत्व :** हम नवाचार के आधुनिक युग में भी सुलेख की प्रासंगिकता और महत्व की चर्चा करेंगे। इसके साथ ही, अतीत और वर्तमान में इस कला के अनुप्रयोग तथा रीड पेन से लेकर डिजिटल तकनीक तक इसके विकास को भी प्रस्तुत किया जाएगा।

**भारतीय सुलेखकारों का योगदान :**

इस अध्ययन में उन उल्लेखनीय भारतीय सुलेखकारों को भी शामिल किया जाएगा, जो मैनुअल (हस्तलिखित) और डिजिटल दोनों माध्यमों में अभ्यास कर रहे हैं और इस कला को नए आयाम दे रहे हैं।

**उद्देश्य :**

हमारा लक्ष्य है सुलेख को एक ऐतिहासिक और दृश्य कला के रूप में व्यापक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करना।

**विषय सूची :-**

1. **प्रथम : मुगल काल के दौरान सुलेख में ऐतिहासिक परिवर्तन**
  - मुगल दरबार में सुलेख का उत्थान और संरक्षण

- धार्मिक ग्रंथों, शाही दस्तावेजों और स्थापत्य कला में सुलेख का उपयोग
  - अरबी, फारसी और स्थानीय शैलियों का सम्मिश्रण
2. **द्वितीय : प्रौद्योगिकी और उसका ऐतिहासिक प्रभाव**
- रीड पेन से प्रिंटिंग प्रेस तक का विकास
  - डिजिटल तकनीक द्वारा सुलेख में नवाचार
  - आधुनिक युग में सुलेख का पुनर्जागरण और लोकप्रियता
3. **तृतीय : भारत में मुगल सुलेखकारों में प्रख्यात व्यक्तित्व**
- प्रमुख सुलेखाचार्य जैसे अब्दुल रहीम खानखाना
  - मुगल शाही हरम की महिलाओं द्वारा सुलेख में योगदान
  - प्रमुख रचनाएँ और उनका ऐतिहासिक महत्व

### भूमिका

भारत में पत्थर, धातु और ताड़पत्रों जैसी सामग्रियों पर विभिन्न लेखन परंपराओं के साथ सुलेख का एक समृद्ध इतिहास रहा है। एक समय में इसका उपयोग मुख्यतः धार्मिक उद्देश्यों के लिए किया जाता था। आज के समय में, सुलेखक पारंपरिक उत्कृष्ट लिखावट को आधुनिक रूपों में पुनः परिभाषित कर रहे हैं और अद्भुत कलाकृतियाँ निर्मित कर रहे हैं। सुलेख कला के सबसे व्यावहारिक रूपों में से एक मानी जाती है और इसे व्यापक रूप से व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए भी अपनाया गया है। अब इसे विस्तारित कर नए अमूर्त एवं अभिव्यंजक क्षेत्रों में ले जाया गया है। आजकल ग्राफिक डिज़ाइन और विज्ञापन क्षेत्र में भी सुलेख का प्रयोग बढ़ गया है। आधुनिक सुलेखकों ने शास्त्रीय सुलेख को मार्गदर्शक बनाकर अपनी रचनाओं में नवीन और सृजनात्मक

अवधारणाओं का विकास किया है, जिन्हें त्रि आयामी-सजावटी सतहों के रूप में भी प्रस्तुत किया जा सकता है। उत्कृष्ट सुलेखक वर्षों तक अभ्यास कर अपनी कला को निखारते हैं और किसी विशेषज्ञ को अपना गुरु बनाकर अपने स्तर को बनाए रखने का प्रयास करते हैं। ललित कला और ग्राफिक डिज़ाइन का अध्ययन गहन समर्पण और प्रतिभा की मांग करता है। कलाकारों को अतीत के पाठों को आत्मसात करने के साथ साथ वर्तमान के अनुरूप नई चीजों का आविष्कार भी करना चाहिए। इसी कारण भारत में एक

समृद्ध सुलेखन परंपरा विकसित हुई है, जिसे आज भी स्मारकों और अभिलेखों में देखा जा सकता है। आधुनिक सुलेखक आज भी अपनी कला में पूर्ण समर्पण और अथक

परिश्रम करते हैं। कई सुलेखक इसे न केवल श्रेष्ठ दृश्य कला का रूप मानते हैं, बल्कि इसे कलात्मक लेखन का भी एक उत्कृष्ट उदाहरण मानते हैं।

### नई प्रौद्योगिकियों का प्रभाव

तकनीकी प्रगति के कारण हस्तलिखित सुलेख धीरे-धीरे-डिजिटल रूप में बदल गया है। अब सुलेखक अपनी हस्तलिखित लिपियों को कंप्यूटर ग्राफिक्स के माध्यम से डिजिटल रूप से प्रस्तुत कर सकते हैं, जो पारंपरिक हस्तलेखन की तुलना में अधिक उन्नत, सस्ता, सटीक और परिष्कृत है। इनपेज जैसे कार्यक्रम नस्ख और नस्तालिक लिपियों के लिए प्रसिद्ध हैं। एडोब, कोरल ड्रा और इनडिज़ाइन जैसे प्रसिद्ध सॉफ्टवेयरों का भी व्यापक उपयोग पारंपरिक लेखन शैलियों को आधुनिक रूप देने में किया जा रहा है। माउस के एक क्लिक से, आज के सुलेखक, टाइपोग्राफर और ग्राफिक डिज़ाइनर डिजिटल माध्यम में अपनी रचनात्मकता को विस्तार दे सकते हैं।

डिजिटल सुलेख ने कला को और अधिक सटीक, सुंदर और कल्पनाशील बना दिया है। जूम सुविधा से किसी भी डिज़ाइन को बड़े या छोटे रूप में देखा जा सकता है। डिजिटल सुलेख एक आधुनिक रचनात्मक लेखन का रूप बन गया है, जिसमें हार्ड ड्राइव, स्कैनर, डिजिटल पेन और टैबलेट जैसे उपकरणों का उपयोग होता है। वाकॉम ग्राफिक टैबलेट्स ने सीधे स्क्रीन पर ड्राइंग और लेखन को सरल बनाया है। विभिन्न फॉन्ट्स तक आसानी से पहुंचने की सुविधा ने रचनात्मकता को नए आयाम दिए हैं।

डिजिटल सुलेख की सहायता से विभिन्न रंगों, बनावटों और विशेष प्रभावों का प्रयोग आसान हो गया है। परिणामस्वरूप, 20वीं शताब्दी के बाद से कंप्यूटर अनुप्रयोगों ने सुलेख की विकास संभावनाओं को बढ़ाया है। ग्राफिक डिज़ाइन में सुलेख का उपयोग विभिन्न व्यवसायिक कार्यों जैसे लोगो डिज़ाइन, लेटरहेड, निमंत्रण पत्र, पोस्टर और कैलेंडर डायरी-निर्माण में किया जा रहा है।

### व्यावसायिक उपयोग

- **लोगो डिज़ाइन** : मैनुअल या डिजिटल रूप में लोगो निर्माण में सुलेख का महत्वपूर्ण योगदान है।
- **लेटरहेड** : औपचारिक और अनौपचारिक पत्राचार के लिए सुंदर सुलेख आवश्यक होता है।
- **निमंत्रण पत्र** : अवसर विशेष की गरिमा बढ़ाने के लिए विभिन्न लेखन शैलियों का प्रयोग होता है।
- **पोस्टर** : आकर्षक और रचनात्मक पोस्टरों के लिए रचनात्मक लेखन अनिवार्य है।

- **कैलेंडर और डायरी** : विभिन्न संदेशों और उद्धरणों के रचनात्मक प्रस्तुतिकरण में भी सुलेख का योगदान रहता है।

### सुलेख की उत्पत्ति और इसके प्रकार

सुलेख की अवधारणा की उत्पत्ति मानव सभ्यता के प्रारंभिक चरणों में हुई, जब गुफाओं में चित्र बनाए जाते थे। विद्वानों का मानना है कि लेखन का प्रारंभ सुमेरियन सभ्यता की कीलाकार लिपि से हुआ। सुमेरियनों ने चित्रलेखों से प्रतीकात्मक और फिर अमूर्त रूपों में विकास किया, जिससे उनकी लिपि क्यूनिफॉर्म बनी। क्यूनिफॉर्म शब्द लैटिन के 'क्यूनस' (वेज़ और 'फॉर्मा' (आकार से बना है। सुमेरियन (, बेबीलोनियन और असीरियन सभ्यताओं में इसका प्रयोग हुआ।

मिस्रवासियों ने भी चित्रलेख प्रणाली का (हाइरोग्लिफिक) विकास किया, जिसमें लगभग 700 प्रतीकों का प्रयोग होता था। इन प्रतीकों का प्रयोग कब्रों की दीवारों और पपीरस पर लेखन हेतु किया जाता था।

फोनीशियनों ने ध्वनि आधारित वर्णमाला का विकास किया, जिसे यूनानियों ने अपनाया और फिर आयनिक वर्णमाला का निर्माण किया, जिसमें 24 वर्ण होते थे।

मध्यकालीन यूरोप में लैटिन भाषा का प्रभुत्व था और गोथिक लिपि लोकप्रिय थी। भिक्षु वर्ग ने धार्मिक ग्रंथों को सुलेख के माध्यम से सुसज्जित किया।

जोहान्स गुटेनबर्ग के 15वीं शताब्दी में प्रिंटिंग प्रेस के आविष्कार से हाथ से लिखे जाने वाले ग्रंथों की आवश्यकता कम हो गई, फिर भी औपचारिक लेखन के लिए सुलेख बना रहा। पुनर्जागरण काल में सुलेख और कला का एक साथ विकास हुआ और इटैलिक लिपि का आविष्कार हुआ।

17वीं शताब्दी में ताम्रपत्रों पर उत्कीर्ण लेखन के कारण हाथ से लिखे सुलेख का प्रचलन घटने लगा। लेकिन 19वीं शताब्दी में विलियम मोरिया द्वारा सुलेख का पुनरुद्धार हुआ।

### मुगल काल में इस्लामी सुलेख का प्रभाव

भारत में सुलेख का विकास विशेष रूप से मुगल काल में हुआ। इस्लामी सुलेख कला को अत्यधिक सम्मान मिला। मुगल दरबार में सुलेख और चित्रकला दोनों का समान रूप से विकास हुआ। प्रसिद्ध फ़ारसी सुलेखक मीर अली तबरीज़ी ने नस्तालिक लिपि का आविष्कार किया, जिसे मुगलों ने अत्यंत सराहा। नस्तालिक, नख्ख और थुलुथ जैसी लिपियाँ व्यापक रूप से उपयोग की गईं।

फ़ारसी सुलेखकों ने कुफिक और नख्ख जैसी लिपियों की कोणीय और गोलाकार शैलियों का प्रयोग किया, जिससे भारतीय सुलेख और कला पर गहरा प्रभाव पड़ा।

### सुलेख कला में प्रकृति

#### प्रस्तावना

सुलेख कला में प्रकृति ने सदैव एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह कला प्राकृतिक तत्वों से अत्यधिक प्रभावित रही है। सुलेख ने प्रकृति के पारलौकिक सार को महसूस करने और उसे अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। विशेषकर इस्लामी सुलेख में, जहाँ कला में आलंकारिक निरूपण का (चित्रण) निषेध रहा, वहाँ प्रकृतिवाद को विशिष्ट स्थान प्राप्त हुआ। सुलेख पवित्र कुरान की आयतों की नकल के माध्यम से प्रतिष्ठित हो गया और इसने कलाकारों के लिए आध्यात्मिक सेवा का एक नया मार्ग खोला। सुलेख को ईश्वर की आराधना का माध्यम माना गया और यह ईश्वर का एक सच्चा उपहार बन गया।

#### प्राकृतिक प्रेरणा और इस्लामी सुलेख

इस्लामी संस्कृति में जीवित प्राणियों के चित्रण पर प्रतिबंध के चलते, सुलेख में मुख्यतः प्राकृतिक रूपों जैसे पक्षी, पौधे, फूल, फल और जानवरों का रूपांकन किया गया। सुलेखक ने कुरान की आयतों और पैगंबर मुहम्मद तथा उनके पौत्र हसन और हुसैन के नामों के माध्यम से अपनी आंतरिक भावनाओं को व्यक्त किया। उन्होंने पवित्रता, सौंदर्य और स्मरणीयता से युक्त छवियों का निर्माण किया।

अरबी अक्षर स्वाभाविक रूप से लचीले और लोचदार होते हैं, जो स्थान और संदर्भ के अनुसार बिना अपनी पहचान खोए रूपांतरित हो सकते हैं। अक्षरों में सामंजस्य, अनुपात और संतुलन का उत्कृष्ट ज्ञान सुलेख को एक विशिष्ट रचनात्मक कला बनाता है।

#### वनस्पति पैटर्न और मुगल काल

सुलेखकों ने कुरान की आयतों को वनस्पति पैटर्न में गढ़ने का प्रयास किया, जिससे लेखन में नयापन और सौंदर्य का समावेश हुआ। भारत में मुगल काल के दौरान बाबर से लेकर औरंगजेब तक के शासनकाल में, सुलेख कला में वनस्पति और जीव जंतुओं के तत्वों का अद्भुत उपयोग किया गया। इसके-

उदाहरण पांडुलिपियों, वास्तुशिल्प संरचनाओं, वस्त्रों, हथियारों और आभूषणों में देखे जा सकते हैं। फ़तेहपुर सीकरी स्थित जामी मस्जिद के जमात खन्ना के मुखौटे पर, पुष्प पृष्ठभूमि के साथ नस्तालिक लिपि में उकेरे गए वनस्पति पैटर्न इसका एक उत्तम उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

#### सुलेख के उपकरण और प्रकृति

सुलेख उपकरणों में भी प्रकृति का विशेष योगदान रहा है। सर्वश्रेष्ठ पेन रीड (नरकट), क्विल और बालसा (पक्षी का पंख) जैसी प्राकृतिक वस्तुओं से बनाए जाते हैं। (हल्की लकड़ी)

सुलेखक अपनी आवश्यकताओं के अनुसार अपने औजारों को स्वयं तैयार करते रहे हैं। इस प्रकार प्रकृति ने सुलेख को भौतिक, आध्यात्मिक और तकनीकी स्तर पर गहराई से प्रभावित किया है।

### अक्षरों की विविधता

अक्षर किसी भी भाषा की आत्मा होते हैं। प्रत्येक भाषा के अपने स्वर और व्यंजन होते हैं, जिनके अनुपात, संरचना और प्रस्तुति का सटीक ज्ञान आवश्यक है। लेटरफॉर्म में काउंटर स्पेसिंग सकारात्मक और नकारात्मक रिक्त स्थान का भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। (संतुलन

अरबी वर्णमाला में 28 अक्षर होते हैं, जिनके चार भिन्न भिन्न-रूप होते हैं। ये सभी व्यंजन हैं और दाएँ से बाएँ लिखे जाते हैं।

अरबी लिपि का उपयोग मुख्यतः धार्मिक और सजावटी

उद्देश्यों हेतु हुआ है। यद्यपि रोमन, चीनी और जापानी लिपियों का भी सजावटी और रचनात्मक रूप से उपयोग हुआ है।

इस्लामी सुलेख में लयबद्धता, संगीतात्मकता और कविता जैसी भावनाएँ रेखाओं के प्रवाह के माध्यम से प्रकट होती हैं। निब की चौड़ाई पर आधारित रेखाओं के अनुपात और प्रवाह का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है।

चीनी सुलेख वर्णमाला पर आधारित न होकर वर्गीकृत पात्रों पर आधारित है। प्रत्येक चीनी पात्र का निर्माण एक विशेष वर्गीय संरचना में किया जाता है, जिसमें वृत्त, त्रिकोण और वर्ग जैसे मूल आकारों की प्रमुख भूमिका होती है। प्रत्येक पात्र में स्ट्रोक की संख्या निश्चित होती है और सजावटी प्रभाव हेतु उसमें परिवर्तन की अनुमति नहीं होती।

### निष्कर्ष

सुलेख कला सुंदरता और सटीकता के साथ लिखावट की एक अद्भुत परंपरा है, जो विश्वभर में लोकप्रिय हुई है। इसका विकास मुख्यतः पूर्वी एशिया, यूरोप, भारत और इस्लामी देशों में हुआ है। पश्चिमी, भारतीय और पूर्वी एशियाई सुलेख में विविधता के बावजूद एक गहरा ऐतिहासिक संबंध देखने को मिलता है।

हमारा उद्देश्य इस शोध में सुलेख की उत्पत्ति, विभिन्न शैलियों और विशेषतः भारतीय रचनात्मक सुलेख का ऐतिहासिक

महत्व उजागर करना है। मुगल काल के दौरान सुलेख में प्रकृति, आध्यात्मिकता और जूमोर्फिज़्म जैसे शांत और रचनात्मक पक्षों की छानबीन करना इस अध्ययन का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

साथ ही हम आधुनिक युग में डिजिटल तकनीक से लेकर

पारंपरिक रीड पेन तक, सुलेख के विकास, इसके अनुप्रयोग और भारतीय सुलेख कलाकारों के योगदान का भी विश्लेषण करेंगे। इस प्रकार हम ऐतिहासिक और दृश्य कला के रूप में सुलेख की एक व्यापक और जीवंत छवि प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहे हैं।

### सन्दर्भ :-

1. डेविड हैरिस: द आर्ट ऑफ कैलीग्राफी, न्यूयॉर्क, 1995।
2. गेन्नोर गोफ्रे और अन्ना रेवेन्सक्रॉफ्ट: कैलीग्राफी स्कूल, चीन, 1996।
3. डायना हार्डी विल्सन: द इनसाइक्लोपीडिया ऑफ कैलीग्राफी टेक्नीक, सर्च प्रेस, लंदन, 2002
4. मैरी एंजेल: द आर्ट ऑफ कैलीग्राफी, ए प्रैक्टिकल गाइड, रॉबर्ट हेल लिमिटेड ग्रेट ब्रिटेन, 1978।
5. जीनीन गौथियर: सुलेख, चीन, 2010।
6. जॉर्ज ए. ग्रियर्सन: लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया, खंड 1, दिल्ली 1977।
7. वी.एन. गोस्वामी: शब्द पवित्र है, पवित्र शब्द है, नियोगी बुक्स, नई दिल्ली, 2006
8. अंजन चक्रवर्ती: भारतीय लघु चित्रकला, लस्ट्रे प्रेस, नई दिल्ली, 1996।
9. फ़्लोरा एंड फ़ौना इन मुगल आर्किटेक्चर, खंड 50 संख्या 3, मार्च 1999, मार्ग प्रकाशन के लिए जे जे भाभा
10. डॉ. जाफ़र रज़ा: भारतीय इस्लामी संस्कृति, इलाहाबाद, 2013।
11. डॉ. जफ़र रज़ा: भारतीय साहित्य में मुसलमानों का अवदान, इलाहाबाद, 2011।
12. सी स्टेनली क्लार्क: मुगल कला और वास्तुकला, कैक्सटन प्रकाशन, दिल्ली, 1988, खंड III।
13. आर. नाथ: मुगल वास्तुकला में सुलेख कला, कलकत्ता: ईरान सोसाइटी, 1979।